361/07.05.2014

Name of the Candidate : Monika Kadiyan
Name of the Supervisor : Dr. Indu Virendra
Department : Hindi

Title of the Thesis : BHAGWATICHARAN VERMA KE UPANYAASON KE STRI PAATRON KA VISHLESHNAATMAK ADHYAYAN

Abstract

प्रस्तुत शोध प्रबंध 'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों के स्त्री-पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में वर्मा जी के उपन्यास साहित्य में चित्रित स्त्री-पात्रों का विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण करते हुए तत्कालीन समाज और समकालीन समाज में स्त्री के संघर्ष को केन्द्र में रखा गया है। इस शोध प्रबंध को छः अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है ।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत स्त्री-विमर्श की अवधारणा की विवेचना की गई है। सर्वप्रथम स्त्री-विमर्श के वैश्विक संदर्भ का अध्ययन किया गया है। भारतीय संदर्भ में भी स्त्री की स्थिति किसी भी दृष्टि से बेहतर नहीं थी। स्त्री से संबन्धित मुद्दे सर्वप्रथम ब्रिटिश काल में ही ज्वलंत हुए। स्त्रियों ने सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल-विवाह, विधवा विवाह निषेध, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए स्वयं को तैयार किया, साथ ही नवजागरण काल की पृष्ठभूमि में स्त्रियों की दयनीय स्थिति पर बहुत से समाज-सुधारकों का ध्यान गया जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर आदि ने सती प्रथा का विरोध, बाल विवाह का विरोध और विधवा विवाह का समर्थन किया, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, पुनर्वास, स्त्रियों की आत्मनिर्भरता का समर्थन किया । स्त्रीवाद के वैचारिक स्वरूप का विश्लेषण करते हुए पितृसत्तात्मक समाज और स्त्री चेतना का अध्ययन किया गया है। हमारे यहाँ परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक है। पितृसत्तात्मक परिवार में स्त्री की स्थिति घरेलू दास की भांति होती है जिसके कर्तव्य हैं, अधिकार नहीं ।

द्वितीय अध्याय में हिंदी उपन्यासों में स्त्री का विश्लेषण प्रारंभिक उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास तथा सुधार आंदोलन और स्त्री नामक शीर्षकों में वर्गीकृत करके किया गया है। प्रारंभिक उपन्यासों में धर्म, आस्था, परंपराओं की जड़ें गहरे पैठी हुई हैं जिनके कारण इनमें स्त्री के परंपरागत स्वरूप की स्थापना करना इनका मुख्य उद्देश्य था। प्रेमचंदपूर्व उपन्यासों में मुख्य रूप से मनोरंजन का उद्देश्य निहित है या मनोरंजन के साथ सुधारवादी भावना भी उपस्थित है। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में भी स्त्री अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति बेचैन तो है पर वह विद्रोह की दिशा में बहुत आगे बढ़ कर सक्रिय भूमिका नहीं निभा सकी। स्वयं प्रेमचंद भी स्त्री की सामाजिक स्थिति से नितांत असंतुष्ट थे। वे समाज में स्त्री की सम्मानपूर्ण स्थिति के हिमायती थे। प्रेमचंदोत्तर काल के उपन्यासों में स्त्री शोषण को अभिव्यक्ति दी गई। देश की स्वतंत्रता, स्त्री जागरण और शिक्षा के प्रसार के बावजूद स्त्री के कारण वह अपना महत्व जानने लगी। इन सुधार आंदोलनों का प्रभाव तत्कालीन उपन्यासों में स्पष्ट दिखाई देता है। परन्तु यह भी वास्तविकता थी कि पितृसत्तात्मक प्रणाली उसे अधिकार प्रदान करने तथा पर्दा प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा जैसी कुरीतियों से मुक्ति के प्रश्न को संदेह से देख रहा था। यही कारण था कि स्त्री विकास उस स्तर तक नहीं हो पाया जिस स्तर तक अपेक्षित था।

तृतीय अध्याय में भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत वर्मा जी के उपन्यासों में तत्कालीन समाज और स्त्री का विश्लेषण किया गया है। यह समय भारत के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण था। इसी प्रकार के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भगवतीचरण वर्मा की दृष्टि में स्त्री का विश्लेषण किया गया है। स्त्री का पारिवारिक जीवन ही मुख्य रूप से उसकी कर्मभूमि होती है। पारिवारिक दायित्व में स्त्री की सहभागिता, स्त्री का सेवाभाव, पुरुष

को जीवन के संघर्ष में प्रेरणा देता है। वर्मा जी के उपन्यासों की स्त्रियाँ ऐसी ही हैं। वे अपने पति के अस्तित्व में अपने सुख, अपनी इच्छाओं, अपने अस्तित्व को लीन करके वास्तविक सुख का अनुभव करती हैं। इस प्रकार वर्मा जी स्त्री के दो रूपों से परिचय कराते हैं। परंपराओं, रीतिरिवाजों, मर्यादाओं को निभाते हुए अपने जीवन को होम करने वाली स्त्री तो है ही परन्तु अपने दूसरे रूप में स्त्री परंपराओं को नहीं, अपनी इच्छाओं को महत्व देती है। यह स्त्री खुली हवा में जीवन की बूंद-बूंद का आनंद लेना चाहती है क्योंकि वह मानती है कि यह उसका अधिकार है। इसके बाद सुधार आंदोलन का प्रभाव और भगवतीचरण वर्मा के स्त्री पात्रों का अध्ययन किया गया है। ये स्त्री पात्र अशिक्षा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री शोषण जैसे भीषण परंपराओं से हट कर संघर्ष कर रहे हैं जो भविष्य के लिए एक आशा जाग्रत करते हैं।

चतुर्थ अध्याय में भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों को पारंपरिक स्त्री, आधुनिक स्त्री, स्त्री के विविध रुपों और स्त्री जीवन के संघर्ष का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रित पारम्परिक स्त्री के अंतर्गत माँ, विवाहिता, बेटी, बहन और प्रेयसी के रूपों का अध्ययन किया गया है। इन चारों रूपों में स्त्री का स्नेह, उसकी सेवा, सहयोग और त्याग से पुरुष सदैव से जीवनशक्ति प्राप्त करता आया है। इन रूपों में, वर्मा जी के स्त्री पात्रों की भूमिका सामान्य होकर भी महत्व की दृष्टि से विशिष्ट है। आधुनिक स्त्री के अंतर्गत स्त्री अपनी विगत स्थितियों का मूल्यांकन करती है। वर्तमान समय में अपनी कार्य योजना निश्चित करती है और अपने भावी कार्यक्रमों की दिशा निर्धारित करती है। वर्मा जी के स्त्री पात्रों में गृहिणी के अतिरिक्त कई अन्य रूप भी प्राप्त होते हैं जैसे समाज सेविका, शिक्षिका, अभिनेत्री, छात्रा, राजनीतिज्ञ आदि। इन विभिन्न रूपों में स्त्री समाज में अपना महत्व कायम करने के लिए निरंतर संघर्षरत है।

पंचम अध्याय में वर्मा जी के उपन्यासों की भाषिक संवदेना का भाषा और शिल्प की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। उनके उपन्यासों में खड़ी बोली का प्रचलित रूप प्राप्त होता है। उनकी भाषा विषय और पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुरूप ही है। शब्द योजना, वाक्य रचना, अलंकारिकता, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, बिंब योजना की दृष्टि से वर्मा जी के उपन्यास की भाषा विशिष्ट है।

अंत में अध्ययन का निष्कर्ष दिया गया है । भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में स्त्री की पारंपरिक छवि का विस्तृत आंकलन है परन्तु साथ ही ऐसी सशक्त स्त्री भी उपस्थित है जो परम्परा को पूर्ण रूप से नकारती नहीं है। वह परंपरा का आदर करती है, जिस सीमा तक परंपरा उसके हितों की सकारात्मक रूप से हिमायती सिद्ध होती है। यह स्त्री अपने भीतर के आर्तनाद को अपने अंदर नहीं छिपाती अपितु निडर होकर उसकी अभिव्यक्ति करती है। यह स्त्री अपने लिए भी उन सभी इच्छाओं, आकांक्षाओं, अधिकारों की पूर्ति के लिए मांग करती है जिन्हें पितृसत्तात्मक संस्कृति ने सदैव से नकारा है। तत्कालीन परिस्थितियों में रचे इन उपन्यासों की उदभावनाएं आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। एक पुरुष द्वारा स्त्री के अंतर्जगत का इतना संतुलित और समाजोपयोगी चित्रण हिंदी साहित्य और समाज का एक अनूठी देन है।